रात्रिक्लास 25/4/68 ओमशान्ति ''शिवबाबा याद है?''

प्रदर्शनी वा म्युज़ियम, प्रोजेक्टर से अच्छी है। इसमें जास्ती दिलचस्पी लगती है किसको समझाने की। चित्रों (में) सबसे अच्छी सीढ़ी है 84 जन्मों की। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हैं। भारत स्वर्ग़ था फिर नर्क कहलाता है। और कोई देश स्वर्ग नहीं कहलाया जा सकता, नर्क कहलाया जावेगा। स्वर्ग़ नहीं। चीन, जापान वालों की भाषा कुछ और होगी। यह भारत की है जिसे मात–पिता कह पुकारते हैं। बाहर वाले गॉडफादर कहते हैं। यहां मदर–फादर का तो बहुत है। यहां तुमको जितना मजा आता है उतना कहीं घरों में नहीं। पिता भी है, बहन–भाई भी हैं। बच्चे जानते हैं अभी सम्मुख बैठे हैं। कितना छोटा परिवार है। भाई–2 तो हैं। फिर यहां यह परिवार है। माँ–बाप और भाई–बहन। फिर घर में जावेंगे तो माँ–बाप तो मिलेंगे नहीं। बुद्धि में भी थोड़ों को आवेगा मात–पिता बैठे हैं आबू में। यहां तो गोद में बैठे हो। फ़र्क तो बहुत है ना। यहां ईश्वरीय परिवार में बैठे हो। वहां तो बहुत मनुष्य देखने में आते हैं। यहां बाप–दादा के सम्मुख बैठे हैं। संगमयुग पर है यह ईश्वरीय परिवार। दैवी परिवार है सतयुग में। यह ब्राह्मण कुल है; परन्तु है ईश्वरीय परिवार। अगर सिर्फ़ ईश्वरीय परिवार ही कहें तो निराकारी दुनिया में चले जावेंगे। ईश्वरीय परिवार है तो ज़रूर कुल भी होगा। ब्राह्मण कुल कहो वा ईश्वरीय परिवार करो(हो) इस समय। वहां इतनी भासना नहीं आवेगी, जब तुम अपने घर में रहते हो। यहां रहने से याद भी रहेगी। वास्तव में यहां रहने वालों का चार्ट अच्छा होना चाहिए; परन्तु याद करते नहीं है। वह रूहाब नहीं है। नहीं तो खुशी में रहे। बाबा ऐसे समझते हैं। अनुभव तो सुना सकते हो ना। यहां और वहां में क्या फ़र्क रहता है। यहां बाबा घड़ी–2 बच्चे कहते रहते हैं। है ही ईश्वरीय परिवार। यहां गृहस्थी का अक्षर ही नहीं। प्रवृत्ति मार्ग भी गृहस्थी मार्ग को कहा जाता है। यहां तो बाप और बच्चे हैं। यह भी संगमयुग पर एक ही बार होता है। ड्रामा को तो बच्चे समझ गये हैं ना। चक्र फिरता रहता है। हमने 84 जन्म लिये हैं। कितने गुरूवार हुये होंगे। हिसाब निकाल सकते हो। मास कितने, दिन कितने हिसाब निकाल सकते हो। जहां दादा है वहां बाप है। बम्बई में जावेंगे तो दोनों ही इकट्ठे। अलग तो यह हो नहीं सकता। सतयुग आदि, कलयुग का अंत इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। समझाते तो बाबा बहुत हैं। अभी यह याद रहे और खुशी रहे। यह भी सदैव दिल में रहे यह बाप दादा है। तो मनमनाभव हुआ ना। बच्चों को सारा दिन रहना चाहिए बाप–दादा। खुशी भी होनी चाहिए; परन्तु इतनी खुशी बच्चों को रहती नहीं जैसे बाबा समझाते हैं। हम बापदादा (से) सुनते हैं यह याद रहे तो चार्ट अच्छा (हो)। सम्(मु)ख में तुम बच्चों को बहुत ही मदद मिलती है। तुम बच्चे यहां आते हो तो फिर भी खुशी रहती है। हमेशा पहले आत्मा याद आना चाहिए, पीछे शरीर। आत्मा अविनाशी है। बाप भी अविनाशी है तो वह याद आना चाहिए। पहले आत्मा, पीछे जीव। आत्मा कहती है मैं शरीर धारण कर पार्ट बजाता हूँ। यह तुम बच्चे जानते हो आत्मा कैसे शरीर धारण पार्ट बजाती है। यह बना बनाया खेल है। पार्ट बजाना है। बना बनाया खेल है। कोई भी फिकरात की बात नहीं। ड्रामा है। यह गये, जाकर पार्ट बजाया। फूल बना अर्थात् सतोप्रधान बना। बच्चे को सतोगुणी कहा जाता है। यह सच्चे महात्मा फूल हैं। बच्चों को सन्यासियों से भी उत्तम रखना पड़ता है। प्यार करना पड़ता है। बाबा प्यार करते हैं। विकारों को कुछ भी जानते नहीं। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट।

(27/4/68 प्रातः) बापदादा ने प्रश्न पूछा तुम्हारी माँ कहा है? मात–पिता कौन है? (कोई ने कहा शिव बाप है, ब्रह्मा बाबा माँ है।) बाबा बोले रॉंग है। फिर संदेशी ने सुनाया ब्रह्मा ही माँ है, ब्रह्मा ही बाप है।) बाबा बोले ठीक है। यह प्रजापिता ब्रह्मा बाप भी है तो माँ भी है। सिर्फ़ मेल होने कारण माँ को मुकर्रर किया है। ज्ञान से मात–पिता इनको कहना पड़ेगा। वह म(म्)मा तो चली गई। बाकी यह (ब्रह्मा) बूढ़ी रह गई है। ब्रह्मपुत्री बहुत बड़ी नदी है। सबसे बड़ा मेला सागर और ब्रह्मपुत्री का लगता है। ओम।